प्राथमिक अंग्रेज़ी

अंग्रेज़ी और विषय सामग्री एकीकरण

भारत में विद्यालय आधारित समर्थन के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid
from the British people

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र–केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्र–छात्राओं के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये हैं और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)। मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 EE09 v2
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई अन्य विषयों के सीखने के लिए अंग्रेज़ी के उपयोग के बारे में और इस बारे में है कि किस प्रकार अन्य विषयों का उपयोग अंग्रेज़ी सीखने के लिए किया जा सकता है। जब आप अंग्रेज़ी भाषा के शिक्षण और विषय के शिक्षण को साथ जोड़ लेते हैं, तो अंग्रेज़ी अलग से सीखनी नहीं पड़ती।

विद्यालय के पाठ्यक्रम की शैक्षिक सामग्री भाषा सीखने के लिए एक सशक्त और रोचक आधार है। यह एक प्रभावी विधि है, जिसका सबसे अच्छा उपयोग आप अपने विद्यालय, या अपने समुदाय, समूह अथवा प्रखंड के अन्य शिक्षकों के साथ सहयोग से कर सकते हैं।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- अन्य विषयों में अंग्रेज़ी भाषा सीखने के अवसरों को पहचानने के लिए।
- अपनी कक्षा में उपयोग के लिए एक विषयगत इकाई की योजना तैयार करने के लिए।
- अपने शिक्षण में विषय-सामग्री और अंग्रेज़ी भाषा के शिक्षण को एकीकृत करने के लिए।

1 एक विषय-वस्तु, कई दृष्टिकोण

प्रत्येक विषय की अपनी स्वयं की शब्दावली और भाषा के उपयोग का तरीका होता है। सामाजिक विज्ञान के बारे में बोलना, पढ़ना और लिखना, विज्ञान के बारे में बोलने, पढ़ने और लिखने से अलग होता है। आप जो पहला केस स्टडी पढ़ेंगे, उसमें शिक्षक/शिक्षिका एक ऐसी विषयगत इकाई की योजना बनाते हैं, जो अंग्रेज़ी को भी आगे बढ़ाएगी।

केस स्टडी 1: सुश्री सविता पानी के विषय.वस्तु पर एक इकाई की योजना बनाती हैं

सुश्री सविता एक नगर के एक क्षेत्रीय माध्यमिक विद्यालय में कक्षा आठवीं के छात्र–छात्राओं को पढ़ाती हैं। वे पानी की कमी से जूझ रहे थे और गर्मी का मौसम शुरू होते ही यह समस्या और बढ़ने वाली थी।

मैं चाहती थी कि छात्र 'पानी' के विषय-वस्तु को अलग अलग नजरियों से देखें, इसलिए मैंने अन्य विषयों के शिक्षकों से बात की।

- विज्ञान में पानी के बारे में एक इकाई थी, जिसकी योजना उस विषय की शिक्षिका ने उसी माह बनाई थी, इसलिए वे सामूहिक शिक्षण के लिए सहमत हो गई।
- गणित की शिक्षिका ने कहा कि छात्र–छात्राओं को आयतन के माप का पाठ अच्छी तरह पढ़ने की ज़रुरत है और उनका विचार था कि वे भी इस पाठ को इस विषय-वस्तु में शामिल कर सकती हैं।
- क्षेत्रीय भाषा की शिक्षिका थिएटर में रुचि रखती थीं और उन्होंने जल संरक्षण और बरसाती जल के संचय के बारे में एक नाटक तैयार करने में छात्र–छात्राओं की मदद करने का प्रस्ताव दिया, जिसका मंचन उनके पड़ोस में किया जा सकता था।
- सामाजिक विज्ञान के शिक्षक इस विषय-वस्तु और उनके विषय की पाठ्यपुस्तक के बीच कोई प्रत्यक्ष प्रासंगिकता नहीं देख पाए थे, लेकिन उन्होंने छात्र–छात्राओं की मानचित्र पढ़ने की कुशलता को मज़बूत करने पर सहमति दी। टीम नियोजन के दौरान, इन शिक्षक ने निर्णय लिया कि छात्र पानी के स्रोतों और मानव बस्तियों के बीच संबंध के बारे में सीख सकते हैं।

पानी को निम्नलिखित पहलुओं से देखते हुए, हम शुरुआत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे [चित्र 1]।

चित्र 1: पानी की विषय-वस्तु पर दृष्टिकोण।

इसके बाद हमने पानी की विषय-वस्तु से संबंधित अनेक गतिविधियों को सूचीबद्ध किया [चित्र 2]।

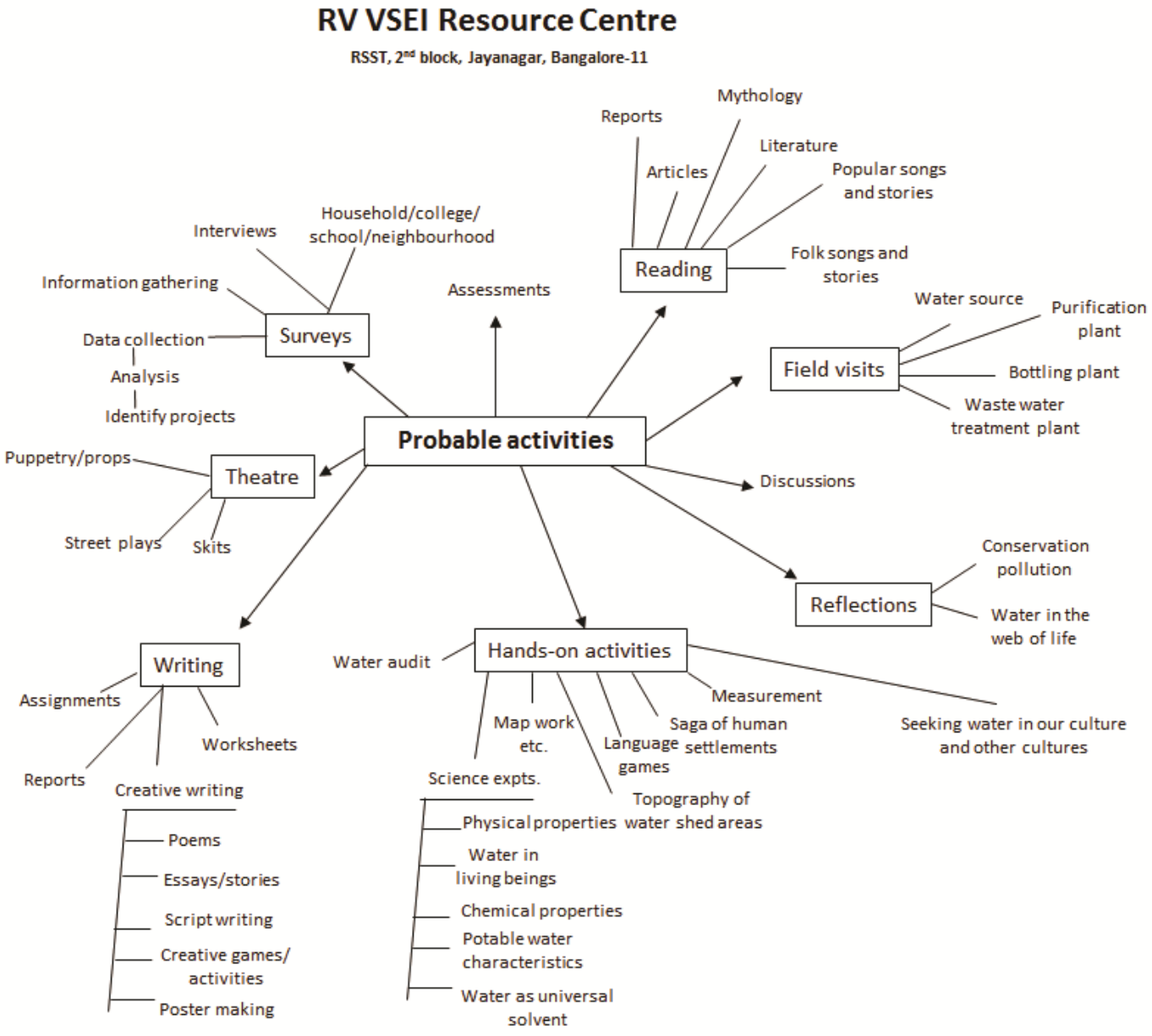

चित्र 2: इसके बाद हमने पानी की विषय-वस्तु से संबंधित अनेक गतिविधियों को सूचीबद्ध किया।

मैंने अंग्रेज़ी शब्दावली और भाषा संरचनाओं को सूचीबद्ध किया, जिन पर मैं ध्यान केंद्रित करने वाली थी। मैंने इस बात की योजना भी बनाई कि छात्र अपने घर की भाषाओं और बोलियों में पानी से संबंधित कहानियाँ और गीत इकट्ठा करेंगे। हम बाद में इनका उपयोग सरल अनुवाद गतिविधियों के लिए कर सकते थे, जैसे कुछ शब्दों के लिए अंग्रेज़ी शब्द ढूँढना, सरल वाक्यांशों और वाक्यों का अनुवाद करना, अथवा गीतों को दोहराना।

संभावित गतिविधियों की सूची बना लेने के बाद, हमें लगा कि हमें अपने छात्र–छात्राओं के साथ मिलकर उन्हें पूरा करने में एक महीने का समय लगेगा।

ज़रा सोचिए

आपके अनुसार सुश्री सविता ने पानी की विषय-वस्तु के बारे में कौन-सी अंग्रेज़ी शब्दावली और वाक्यों की सूची बनाई होगी? पानी की विषय-वस्तु पर केंद्रित कुछ अंग्रेज़ी शब्दों और वाक्यांशों के लिए आप भी अपने स्वयं के विचारों की सूची बनाएँ। ये शब्द इनसे जोड़े जा सकते हैं:

- कविता और रचनात्मक लेखन
- क्रियाएँ (पानी डालना, धोना, पीना, छिड़कना)
- पर्यावरण संबंधी अभियान (पानी व्यर्थ न बहाएँ)।

अन्य विषयों से जुड़े कुछ शब्दों और वाक्यों को अंग्रेज़ी में सूचीबद्ध करने का प्रयास करें। उदहारण के लिए, गणित में ये 'capacity' और 'estimate the volume of water in the container' हो सकते हैं

अपने विद्यालय के बारे में सोचें। इस समय अन्य विषयों के शिक्षक किन विषयों या विषय-वस्तुओं पर काम कर रहे हैं? क्या वे कोई ऐसे विषय पढ़ा रहे हैं, जहाँ कुछ हद तक अंग्रेज़ी भाषा का अभ्यास किया जा सकता है? क्या इन विषयों में कोई ऐसी पाठ्य-सामग्री है, जिसे आप अपनी भाषा के पाठ में एकीकृत कर सकते हैं?

वीडियो: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना

2 विषय-वस्तु के रूप में कागज़ का उपयोग करना

गतिविधि 1: 'कागज़' के बारे में एक विषयगत इकाई में अंग्रेज़ी

चित्र 3 में माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिए कागज़ की विषय-वस्तु के लिए अंग्रेज़ी-भाषा की गतिविधियाँ दर्शाई गई हैं। ध्यान दें कि शिक्षक ने प्रत्येक विशिष्ट गतिविधि के अंतर्गत अंग्रेज़ी-भाषा की विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया है।

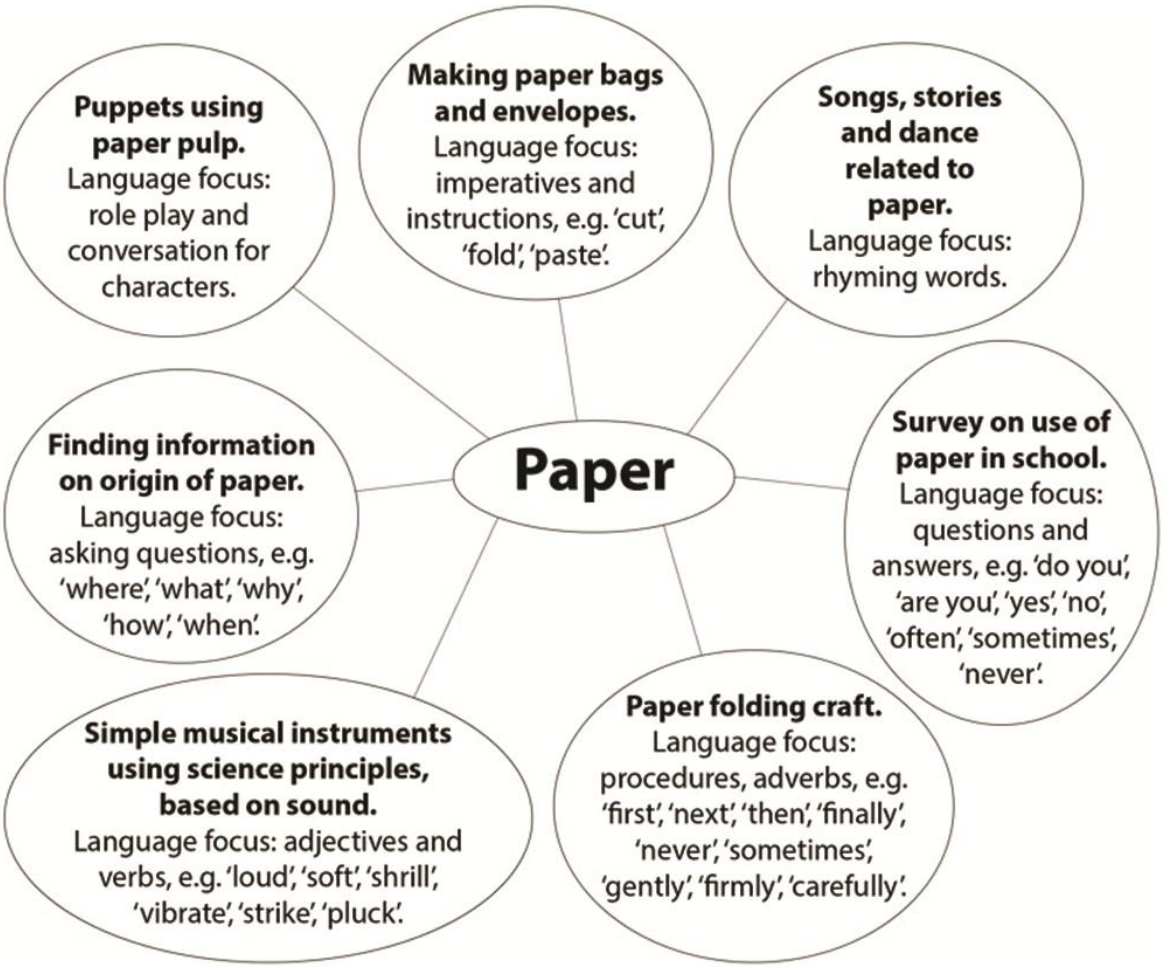

चित्र 3: अंग्रेज़ी भाषा में कागज़ की विषय-वस्तु से संबंधित एकाधिक गतिविधियाँ
(Figure 3 Multiple English-language activities related to the theme of paper)

चित्र 3 को देखकर निम्नलिखित की पहचान करें:

- चित्र में सूचीबद्ध प्रत्येक गतिविधि किस प्रकार विद्यालय के एक विषय से संबंधित है।
- ज़्यादा छात्र–छात्राओं वाली एक कक्षा में इन गतिविधियों को करने के लिए कितना समय लगेगा।
- किन संसाधनों की आवश्यकता होगी।

क्या एक अकेला शिक्षक ये सभी गतिविधियाँ कर सकता है, या इसे अन्य विषयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं के आपसी सहयोग के साथ किया जाना चाहिए।

अगले केस स्टडी में, इस बारे में पढ़ें कि किस तरह एक शिक्षक गणित और पेपर क्राफ्ट की एक गतिविधि के द्वारा छात्र–छात्राओं की अंग्रेज़ी को विकसित करने की योजना बनाते हैं।

केस स्टडी 2: श्री विजय कुमार अंग्रेज़ी और गणित को पेपर क्राफ्ट में एकीकृत करते हैं

श्री विजय कक्षा सात को पढ़ाते हैं। ध्यान दें कि एक फ्लेक्सागॉन का टेम्पलेट संसाधन 1 में उपलब्ध है।

कागज़ की एक विषयगत इकाई में, मैं अंग्रेज़ी भाषा पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। मैंने गणित और विज्ञान के शिक्षकों से

सलाह ली और एक पेपर क्राफ्ट गतिविधि की योजना बनाई। छात्र–छात्राओं को कागज़ की एक ऐसी ज्यामितीय आकृति बनानी थी, जिसका उपयोग विज्ञान की जानकारी को प्रस्तुत करने के लिए किया जा सके।

मेरी ज़्यादा छात्र–छात्राओं वाली एक बड़ी कक्षा है, जिसमें 48 छात्र हैं। अंग्रेज़ी की घंटी लंच के ठीक बाद थी। मैंने चार छात्र–छात्राओं से अनुरोध किया कि वे दस मिनट जल्दी आ जाएँ और हर छात्र की डेस्क पर उसके लिए कागज़ की एक शीट रखने में मेरी मदद करें। मेरी कक्षा की एक छात्रा, सविता, नेत्रहीन है। पिछले सप्ताह जब विशेष शिक्षिका हमारे विद्यालय में आई थीं, तब मैंने उनसे सलाह ली थी। उन्होंने सुझाव दिया था कि मैं इस गतिविधि के लिए सविता को सैंडपेपर की एक शीट दे सकता हूँ।

मैंने अंग्रेज़ी में निर्देश दिए। मैंने पाठ से पहले इसका अभ्यास किया था। मैंने धीरे-धीरे, चरणबद्ध रूप से यह कहा और प्रदर्शित करके दिखाया:

> आज हम एक फ्लेक्सागॉन बनाने वाले हैं। (We are going to make a flexagon today)
>
> मैंने आप सभी को कागज़ की एक 20 x 10 वर्ग सेंटीमीटर वाली शीट दी है। अब मेरे निर्देश ध्यान से सुनें। मैं यह करके दिखाऊँगा और मैं हर बात दो बार दोहराऊँगा। कृपया निर्देशों को ध्यान से सुनें। जब मैं अपने निर्देश पूरे कर लूं, उसके बाद आप मुझसे मदद माँग सकते हैं। (I have given each of you a 20 x 10 square centimetre sheet of paper. Now listen to my instructions carefully. I will demonstrate, and I will repeat everything twice. Please listen to the instructions carefully. You may ask for help after I complete my instructions)
>
> क्या आप सब तैयार हैं? क्या हम शुरू करें? (Are you ready? Shall we begin?)
>
> सबसे पहले, पूरी लंबाई में आयत के बीच वाली रेखा बनाएँ, और लंबे किनारों को इस बीच वाली रेखा तक पूरी तरह मोड़ें। (First, firmly crease the middle line of the rectangle along the length, and firmly fold the long edges to this midline)
>
> इसके बाद, इसे इस तरह मोड़ें, ताकि चौड़ाई में आठ सामान खंड बन जाएँ। अब आपके पास आठ आयत हैं – चार बीच वाली रेखा से ऊपर और चार इस रेखा से नीचे।
> (Second, fold to make eight equal segments along the width. You now have eight rectangles – four along the top of the middle line and four along the bottom of this line)
>
> इसके बाद, आपने जो आयत मोड़े हैं, उन सभी के भीतर एक पेन्सिल की सहायता से ध्यानपूर्वक विकर्ण बनाएँ। उन्हें अच्छी तरह मोड़ें। अब, कागज़ के बाएँ और दाएँ हिस्सों को एक साथ लाएँ और इनमें से एक को दूसरे में डालकर एक त्रि-आयामी प्रिज्म बनाएँ। (Next, with a pencil, carefully draw diagonals inside each of the rectangles you have folded. Crease them well. Then, bring the paper's left and right sides together and insert one side inside the other, making a three-dimensional prism)
>
> इसके बाद, तीन त्रिभुजाकार भागों को धीरे-धीरे एक-दूसरे के ऊपर दबाएँ। अब ध्यानपूर्वक ऊपर वाले तीनों बिंदुओं को नीचे केंद्र तक दबाएँ। (Next, gently push in the three triangular areas at the top of each other. Then carefully press all the three top points down and through the centre)
>
> क्या आप देख सकते हैं कि त्रिभुजों की अगली पंक्ति भी इसी तरह की आकृति बनाती है? (Can you see that the next row of triangles makes a similar shape?)

फिर एक बार ऊपर वाले तीनों बिंदुओं को नीचे केंद्र तक दबाएँ। (Once again, press all the three top points down and through the centre)

अंत में, मॉडल को उल्टा घुमाएँ और धीरे-धीरे तीन त्रिभुजाकार क्षेत्रों को एक-दूसरे के ऊपर दबाएँ। (Finally, turn the model over and gently push in the three triangular areas at the top of each other)

अब आपका फ्लेक्सागॉन तैयार है। आप इसके प्रत्येक हिस्से में एक अलग चित्र बनाकर इसका उपयोग भोजन चक्र जैसे किसी चक्र को दर्शाने के लिए कर सकते हैं। आपमें से कितने लोग फ्लेक्सागॉन को पूरा करने में सक्षम रहे? किसे मदद चाहिए? (Your flexagon is now ready. You can use this to show a cycle such as the food chain by drawing a different picture on each of its faces. How many of you were able to complete the flexagon? Who needs help?)

मुझे यह देखकर खुशी हुई कि, अपने पड़ोसी छात्र से थोड़ी मदद लेकर सविता ने भी अपना फ्लेक्सागॉन पूरा कर लिया था।

ज़रा सोचिए

श्री विजय ने एक गणितीय गतिविधि विकसित की, जहाँ छात्र सीखने के लिए संसाधन बनाते समय सक्रिय रूप से अंग्रेज़ी सुन रहे थे। उन्होंने इस गतिविधि के दौरान कक्षा के प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए नियम स्थापित करके शुरुआत की। उन्होंने अपने निर्देश अलग अलग तरीकों से दोहराए। फ्लेक्सागॉन की दृश्य सहायता से भाषा सीखने की सभी गतिविधियों को मजबूती दी।

- श्री विजय द्वारा उपयोग की गई अंग्रेज़ी भाषा की पहचान करें, जो थी:
  - गणितीय
  - निर्देशात्मक और क्रमबद्धता के बारे में
  - कक्षा के प्रबंधन के बारे में सामान्य।
- उन्होंने क्या दोहराया, और क्यों?
- किन शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ समान हैं?
- क्या आप पहचान सकते हैं कि श्री विजय फ्लेक्सागॉन के पाठ में अपने छात्र–छात्राओं को गणित के बारे में और अंग्रेज़ी में क्या पढ़ाना चाहते थे? ये इस प्रकार थे:
  - **गणित:** गणितीय शब्दावली विकसित करना और क्रियात्मक सन्दर्भ में इसका सही–सही उपयोग करना – 'centimetre', 'rectangle', 'edge', 'diagonal', 'three-dimensional', 'prism', 'triangular'
  - **अंग्रेज़ी:** अंग्रेज़ी में निर्देशों का पालन करना; क्रमबद्ध भाषा को समझना और उपयोग करना ('first', 'second', 'next', 'then', 'finally'); और आदेश सूचक कथनों को सुनना और प्रतिक्रिया (response) देना।
- क्या इस पाठ में आप अन्य विषयों के लिए या छात्र–छात्राओं के सामान्य विकास के लिए कोई अन्य शिक्षण लक्ष्य पहचान सके?

- संसाधनों के वितरण की श्री बाजवा की रणनीति के बारे में आप क्या सोचते हैं? आप इसे किस तरह अलग ढंग से करेंगे?
- क्या कक्षा के सभी छात्र इस गतिविधि में भाग ले सकते हैं? क्यों या क्यों नहीं?

3 अपनी कक्षा में अंग्रेज़ी और विषय सामग्री का एकीकरण

गतिविधि 2: एक विषय-वस्तु और गतिविधियाँ चुनना – एक योजना गतिविधि

- अपने सहकर्मियों के साथ पाठ्यक्रम के किसी भी विषय के बारे में एक विषय-वस्तु चुनें।
- साथ मिलकर आपके द्वारा चयनित विषय-वस्तु पर आधारित गतिविधियों की सूची बनाएँ।
- इसके बाद आपको गतिविधियों में अंग्रेज़ी भाषा सीखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। विषय शिक्षकों से उपयुक्त गतिविधियों के बारे में बात करें और साथ मिलकर उस शब्दावली और संवाद कौशल के बारे में निर्णय लें, जो आप छात्र–छात्राओं में विकसित करना चाहते हैं।
- इस बात का अनुमान लगाएँ कि आपको इन गतिविधियों को पूरा करने में कितना समय लगेगा – एक सप्ताह या ज्यादा?
- उन सभी संसाधनों और सामग्रियों की सूची बनाएँ, जिनकी आपको ज़रुरत होगी।
- इस बारे में चर्चा करें कि आप अंग्रेज़ी भाषा के लिए और विषय के लिए, इस विषय कार्य में छात्र–छात्राओं का मूल्यांकन कैसे करेंगे।

अपने विचारों को व्यवस्थित करने में आपकी और आपके सहकर्मियों की मदद के लिए संसाधन 1 में योजना टेम्पलेट देखें।

अपने छात्र–छात्राओं को तैयार करना और उन्हें इस योजना की जानकारी देना एक अच्छा तरीका है, खासतौर से यदि उन्होंने इससे पहले कोई विषयगत इकाई न की हो। इस बारे में सोचें कि आप कक्षा को इस इकाई और गतिविधियों की जानकारी कैसे देंगे।

जब आप अपनी विषयगत इकाई कार्यान्वित करते हैं, तो एक डायरी बनाकर रखें। इस बारे में टिप्पणियाँ लिखें:

- क्या सफल रहा और क्यों, क्या विफल हुआ और क्यों
- आपके सामने क्या समस्याएँ आईं और आपने उन्हें कैसे सुलझाया
- आपके खुद के निरीक्षण और आपके सहकर्मियों के साथ मिलकर सामूहिक निरीक्षण
- छात्र–छात्राओं की प्रतिक्रिया (response) और आकलन के अवसर।

जब आप अपने छात्र–छात्राओं के साथ गतिविधियाँ करते हैं, तो उस नई अंग्रेज़ी शब्दावली और वाक्य संरचनाओं की निगरानी करें, जिसे वे सीख रहे हैं। छात्र भाषा के जिस पहलू के साथ पहले ही परिचित हैं, उन्हें मज़बूत करें। हर छात्र पर ध्यान दें, ताकि आप अंग्रेज़ी सीखने में छात्र–छात्राओं की प्रगति का ध्यान रख सकें – आप समय के साथ-साथ अलग अलग छात्र–छात्राओं के साथ यह कर सकते हैं।

विषयगत इकाई के अंत में आप अपने छात्र–छात्राओं का कार्य विद्यालय के अन्य छात्र–छात्राओं को और उनके अभिभावकों को दिखा सकते हैं। यह प्रदर्शनी उनके कार्य या प्रदर्शन को दर्शा सकती है।

विषयगत परियोजनाओं में छात्र–छात्राओं के शिक्षण का मूल्यांकन करने और उसे दर्ज करने की विधियों के बारे में जानने के लिए संसाधन 2 'प्रगति और प्रदर्शन का आकलन करना' देखें।

4 सारांश

इस इकाई में हमने विषयगत इकाइयों में सामग्री और अंग्रेज़ी भाषा के एकीकरण पर ध्यान केन्द्रित किया है।

एक विषयगत इकाई में एक सप्ताह या अधिक समय के लिए एक साझा विषय-वस्तु पर विषय और भाषा गतिविधियों की योजना बनाना शामिल होता है। आप एक विषय-वस्तु के लिए कितना समय आवंटित करते हैं, यह इस बात पर निर्भर होता है कि आप सामग्री की कितनी मात्रा को शामिल करना चाहते हैं, आपके छात्र–छात्राओं का आयु वर्ग और क्षमता कितनी है और बेशक इस पर भी कि पाठों को कार्यान्वित करने के लिए कुल कितना समय उपलब्ध है।

विषयगत इकाइयों में अन्य विषय शिक्षकों के साथ समन्वय और योजना शामिल होता है। लेकिन जिन शिक्षकों ने इस पद्धति को आजमाया है, वे इसके परिणामों से अत्यंत संतुष्ट रहे हैं। छात्र–छात्राओं को भी यह अनुभव बहुत उपयोगी महसूस हुआ है। यदि आपने पहले कभी अंग्रेज़ी को किसी विषय के साथ एकीकृत करने की कोशिश नहीं की है, तो हम आशा करते हैं कि आप अब आत्मविश्वासी महसूस कर रहे होंगे कि आप अपने विद्यालय में एक या दो विचार आजमाकर देखें।

प्रारंभिक अंग्रेज़ी हेतु इस विषय पर अन्य शिक्षक विकास इकाईयाँ हैं:

- *रचनात्मक कलाओं में अंग्रेज़ी सीखना*
- *अंग्रेज़ी के लिए सामुदायिक संसाधन*
- *सीखने की योजना बनाना।*

संसाधन

संसाधन 1: योजना निर्माण टेम्पलेट

एक ग्राफिक ऑर्गनाइजर जानकारी को व्यवस्थित करने का एक चित्रात्मक तरीका होता है। इसके कई अलग अलग प्रकार हैं। यह किसी विषय वस्तु पर आधारित भाषा गतिविधियों की सूची बनाने के लिए एक उपयोगी संसाधन है और इसका उपयोग समझ को स्पष्ट करने या सारांश में लिखने के लिए किया जा सकता है।

ग्राफिक ऑर्गनाइजर बेहतर ढंग से याद रखने में भी हमारी मदद करते हैं (चित्र R1.1–5)। शिक्षकों द्वारा उनका उपयोग नियोजन के लिए, ध्याप्न के दौरान और छात्र–छात्राओं के मूल्यांकन के लिए किया जा सकता है। छात्र–छात्राओं द्वारा उनका उपयोग नोट्स लेने, अपने शिक्षण को एकत्र करने या पुनः ताज़ा करने के लिए एक रेडी रेकनर के रूप में किया जा सकता है।

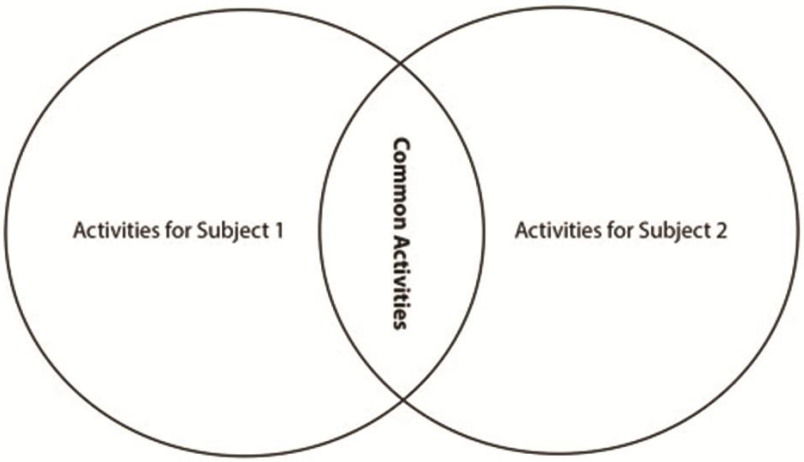

चित्र R1.1 वेन:यदि आप दो विषयों जैसे अंग्रेज़ी और विज्ञान के लिए योजना बना रहे हैं।

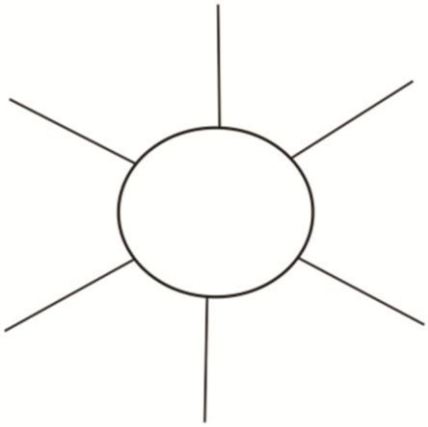

चित्र R1.2 जाल: एक विषय-वस्तु पर सभी गतिविधियों की सूची बनाने के लिए।

चित्र R1.3 अनुक्रम श्रृंखला: एक गतिविधि क्रमबद्ध रूप से अगली गतिविधि पर ले जाती है।

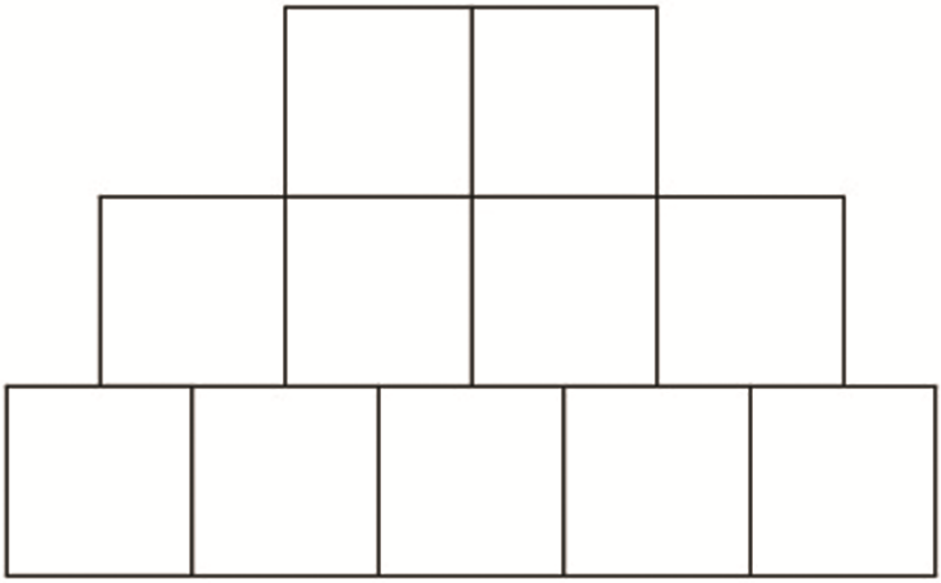

चित्र R1.4 पिरामिड: छात्र–छात्राओं को पहले 'आधारभूत' गतिविधियाँ पूर्ण करनी चाहिए, उसके बाद ही वे अगली गतिविधियों पर कार्य कर सकते हैं, जिनके लिए आधारभूत ज्ञान या कौशल की आवश्यकता होगी।

FANTASTIC FLEXAGONS

The flexagon is an amazing model. As you flex it on its centre, each time a different picture comes into view. It can be used to depict any four stage cycle or sequence. It is simply unbelievable that paper can rotate like this without tearing. You can make a flexagon using an old xerox paper.

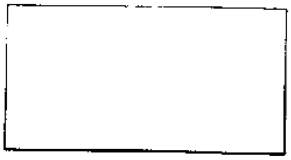

1. Take a 20-cm x 10-cm sheet of bond paper. This rectangle should be made up of two exact squares.

2. Crease the middle line along the length and fold the long edges to this midline.

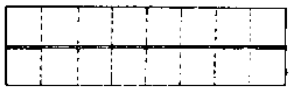

3. Fold eight equal segments along the width.

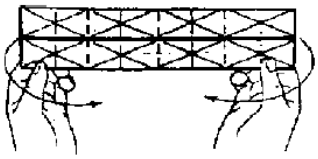

4. With the help of a pencil and scale, first draw the diagonal lines as shown and then crease them well.

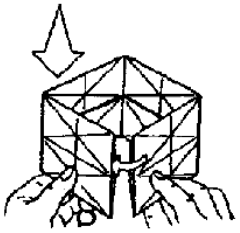

5. Bring the paper's left and right sides together and insert one side inside the other, thereby. Making a three dimensional prism.

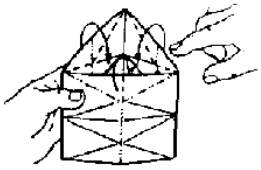

6. Push in the three triangular areas at the top of each other.

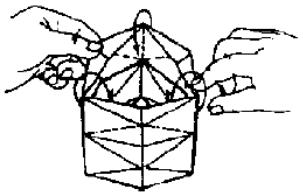

7. Press all the three top points down and through the centre. The next row of triangles will assume a similar shape.

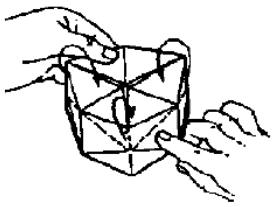

8. Once again, press all three top points down and through the centre.

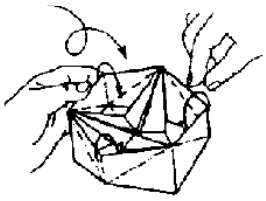

9. Turn the model over and push in the three triangular areas at the top of each other.

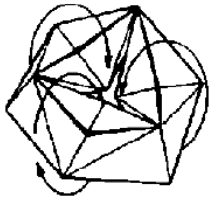

10. This will complete the flexagon. To make it rotate hold it on either side or twist the outer edges in towards the centre, so that the inner surfaces appear.

11. Every time you rotate the flexagon a different facet is exposed. You can depict a cycle or a sequence by drawing a different picture on each of the facets.

For instance, you can depict the FOOD CHAIN as INSECTS are eaten by the FROGS, who are eaten by the SNAKES - who in turn are eaten by the EAGLES.

Similarly, you could depict the RAIN CYCLE, LIFE CYCLE OF A FROG OR A BUTTERFLY, A CYCLE OF SEASONS etc on the Flexagon. The Flexagon is a very powerful model for depicting any cycle.

चित्र R1.5 फ्लेक्सागॉन: केस स्टडी 2 देखें।

संसाधन 2: प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

छात्र–छात्राओं के सीखने का आकलन करने के दो उद्देश्य हैं:

- **योगात्मक आकलन** पीछे मुड़ कर देखता है और जो पहले से सीखा गया है उसका निर्णय करता है। यह सामान्यतया परीक्षाओं के स्वरूप में आयोजित किया जाता है, जहाँ छात्र–छात्राओं को परीक्षा में प्रश्नों के प्रति उनकी उपलब्धियों को बताते हुए श्रेणीकृत किया जाता है। इससे परिणामों की रिपोर्टिंग में मदद मिलती है।
- **निर्माणात्मक आकलन** (या सीखने का मूल्यांकन) काफ़ी अलग है, जो अधिक अनौपचारिक तथा नैदानिक स्वरूप का होता है। शिक्षक उन्हें शिक्षण प्रक्रिया के अंग के रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए, जहाँ यह पता लगाने के लिए प्रश्न पूछने का इस्तेमाल किया जाता है कि क्या छात्र–छात्राओं
  ने किसी चीज़ को समझा है या नहीं। इस आकलन के परिणामों का फिर अगले शिक्षण अनुभव को बदलने के लिए उपयोग किया जाता है। अनुश्रवण और फ़ीडबैक निर्माणात्मक आकलन का हिस्सा है।

निर्माणात्मक आकलन शिक्षा-प्राप्ति को बढ़ाता है, क्योंकि सीखने के लिए, अधिकांश छात्र–छात्राओं को:

- समझना चाहिए कि उनसे क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है
- जानना चाहिए कि अपनी पढ़ाई में वे इस समय किस स्तर पर हैं
- समझना चाहिए कि वे किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं (अर्थात् क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए)
- जानना चाहिए कि कब उन्होंने लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम हासिल कर लिए हैं।

शिक्षक के रूप में, अगर आप प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त चार बिंदुओं पर ध्यान देंगे, तो आप अपने छात्र–छात्राओं से सबसे अच्छा परिणाम प्राप्त करेंगे। इस प्रकार पढ़ाने से पहले, पढ़ाते समय और पढ़ाने के बाद आकलन किया जा सकता है:

- **पहले:** पढ़ाने से पहले आकलन से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि छात्र क्या जानते हैं और पढ़ाने से पहले क्या कर सकते हैं। यह आधार-रेखा निर्धारित करता है और आपको अपनी शिक्षण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक बिंदु देता है। छात्र क्या जानते हैं इस बारे में अपनी समझ को बढ़ाने से, छात्र–छात्राओं को जिसमें पहले से ही महारत हासिल है, उसे दुबारा पढ़ाने या संभवतः उन्हें जो जानना या समझना है (लेकिन नहीं जानते), उसे छोड़ने के मौक़े कम होंगे।
- **पढ़ाते समय:** कक्षा में पढ़ाते समय आकलन करने में यह देखना शामिल है कि क्या छात्र सीख रहे हैं और उनमें सुधार हो रहा है। इससे आपको अपनी शिक्षण पद्धति, संसाधनों और गतिविधियों का समायोजन करने में मदद मिलेगी। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि छात्र वांछित उद्देश्य की दिशा में किस प्रकार प्रगति कर रहा है और आपका शिक्षण कितना सफल है।
- **पढ़ाने के बाद:** शिक्षण के बाद किया जाने वाला आकलन पुष्टि करता है कि छात्र–छात्राओं ने क्या सीखा है और आपको दर्शाता है कि किसने सीखा है और किसे अभी मदद की ज़रूरत है। इससे आप अपने शिक्षण लक्ष्य का प्रभावी आकलन कर सकेंगे।

पहले: आपके छात्र क्या सीखेंगे इस बारे में स्पष्ट रहना

जब आप तय करते हैं कि छात्र–छात्राओं को पाठ या पाठों की शृंखला में क्या सीखना चाहिए, तो आपको उसे उनके साथ साझा करना चाहिए। सावधानी से अंतर करें कि छात्र–छात्राओं को आप क्या करने के लिए कह रहे हैं, और छात्र–छात्राओं से क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है। ऐसा प्रश्न पूछिये जिससे कि आपको इस बात का आकलन करने का अवसर प्राप्त हो कि क्या उन्होंने वाक़ई समझा है या नहीं। उदाहरण के लिए:

छात्र–छात्राओं को जवाब देने से पहले सोचने के लिए कुछ सेकंड का समय दें, या शायद छात्र–छात्राओं को पहले जोड़े या छोटे समूहों में अपने जवाब पर चर्चा करने के कहें। जब वे आपको अपना उत्तर बताएँ, आप जान जाएँगे कि क्या वे समझते हैं कि उन्हें क्या सीखना है।

पहले: जानना कि छात्र अपने सीखने के किस स्तर पर हैं

आपके छात्र–छात्राओं में सुधार के लिए मदद करने के क्रम में आपको और उन्हें उनके ज्ञान और समझदारी की वर्तमान अवस्था को जानने की ज़रूरत पड़ेगी। जैसे ही आप वांछित शिक्षण परिणामों या लक्ष्यों को साझा कर लें, आप निम्न कर सकते हैं:

- छात्र–छात्राओं को मानसिक मानचित्र बनाने या उस विषय के बारे में वे पहले से क्या जानते हैं, उसे सूचीबद्ध करने के लिए जोड़े में कार्य करने के लिए कहें, और उन्हें उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दें, लेकिन उन चंद विचारों के लिए बहुत ज़्यादा समय नहीं देना चाहिए। उसके बाद आप उन मानसिक मानचित्र या सूचियों की समीक्षा करें।
- महत्वपूर्ण शब्दावली को बोर्ड पर लिखें और छात्र–छात्राओं को स्वेच्छा से आगे आने के लिए कहें और फिर यह बताने के लिए कहें कि प्रत्येक शब्द के बारे में वे क्या जानते हैं। फिर बाक़ी कक्षा से कहें कि यदि वे शब्द समझते हैं, तो अपना अंगूठा थम्ब्स-अप की मुद्रा में ऊपर उठाएँ, यदि वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं, तो थम्ब्स-डाउन की मुद्रा में नीचे करें और यदि वे कुछ जानते हैं, तो अंगूठे को क्षैतिज यानी बीच में रखें।

कहाँ से शुरुआत करनी है, यह जानने का मतलब है कि आप अपने छात्र–छात्राओं के लिए प्रासंगिक और रचनात्मक रूप से पाठ की योजना बना सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आपके छात्र यह आकलन करने में सक्षम हों कि वे कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं, ताकि आप और वे, दोनों जान सकें कि उन्हें आगे क्या सीखने की ज़रूरत है। आपके छात्र–छात्राओं को स्वयं अपने शिक्षण का भार उठाने का अवसर प्रदान करने से उन्हें आजीवन शिक्षार्थी बनाने में मदद मिलेगी।

पढ़ाते समय: सीखने में छात्र–छात्राओं की प्रगति सुनिश्चित करना

जब आप छात्र–छात्राओं से उनकी वर्तमान प्रगति के बारे में बात करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें आपका फीडबैक उपयोगी और रचनात्मक, दोनों लगे। काम को इस प्रकार करें:

- छात्र–छात्राओं को अपनी ताक़त और यह जानने में मदद करना कि वे कैसे और सुधार कर सकते हैं
- इस बारे में स्पष्ट रहना कि आगे और किस चीज़ के विकास की ज़रूरत है
- इस बारे में सकारात्मक रहना कि वे किस प्रकार अपनी शिक्षा का विकास कर सकते हैं, जाँचना कि वे समझते हैं और आपकी सलाह का उपयोग करने में सक्षम महसूस करते हैं।

आपको छात्र–छात्राओं के लिए उनकी समझ को विकसित करने के लिए अवसर मुहैया कराने की ज़रूरत पड़ेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाई के मामले में छात्र–छात्राओं के वर्तमान स्तर और जहाँ आप उन्हें देखना चाहते हैं, इसके बीच के अंतराल को समाप्त करने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी पाठ योजना को संशोधित करना पड़े। ऐसा करने के लिए आपको इस प्रकार करना होगा:

- कुछ ऐसे कार्य पर वापस नज़र दौड़ाना होगा, जिनके बारे में आपने सोचा था कि वे पहले से जानते हैं
- आवश्यकता के अनुसार छात्र–छात्राओं के समूह बनाना, उन्हें अलग-अलग कार्य देना
- छात्र–छात्राओं को स्वयं यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना कि उन्हें किन संसाधनों को पढ़ने की ज़रूरत है ताकि वे 'स्वयं अपनी कमी को पूरा कर सकें'
- 'निम्न प्रवेश, ऊँची सीमा' वाले कार्यों का उपयोग करना, ताकि सभी छात्र प्रगति कर सकें - इन्हें इसलिए अभिकल्पित (design) किया गया है कि सभी छात्र काम शुरू कर सकें, लेकिन अधिक योग्य छात्र को प्रतिबंधित न किया जाए और वे अपने ज्ञान के विस्तार के लिए प्रगति कर सकें।

पाठों की रफ़्तार को धीमा करके, अक्सर आप असल में पढ़ाई की रफ्तार को तेज़ करते हैं, क्योंकि आप छात्र–छात्राओं को उस पर सोचने और समझने का समय और आत्मविश्वास देते हैं, जिसमें उन्हें सुधार लाने की ज़रूरत होती है। छात्र–छात्राओं को आपस में अपने काम के बारे में बात करने का मौक़ा देकर, और इस बात पर चिंतन करके कि कमी कहाँ पर है और वे इसे किस प्रकार से ख़त्म कर सकते हैं, आप उन्हें स्वयं का आकलन करने के तरीक़े मुहैया करा रहे हैं।

पढ़ाने के बाद: प्रमाण एकत्रित करना और उसकी व्याख्या करना, और आगे की योजना बनाना

जब शिक्षण–अधिगम चल रहा हो और कक्षा-कार्य और गृह-कार्य निर्धारित करने के बाद, ज़रूरी है कि:

- इस बात का पता लगाएँ कि आपके छात्र–छात्रा कितनी अच्छी तरह कार्य कर रहे हैं
- इसे अगले पाठ के लिए अपनी योजना सूचित करने के लिए उपयोग में लाएँ
- छात्र–छात्राओं को प्रतिक्रिया दें।

आकलन की चार प्रमुख स्थितियों की नीचे चर्चा की गई है।

सूचना या प्रमाण एकत्रित करना

प्रत्येक छात्र, स्वयं अपनी गति और शैली में, स्कूल के अंदर और बाहर अलग–अलग प्रकार से सीखता है। इसलिए, छात्र–छात्राओं का आकलन करते समय आपको दो चीजों की आवश्यकता है:

- विविध सूत्रों से जानकारी एकत्रित करें - स्वयं अपने अनुभव से, छात्र, छात्र–छात्राओं, अन्य शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से।
- छात्र–छात्राओं का व्यक्तिगत रूप से, जोड़ों में और समूहों में आकलन करें, तथा स्व-आकलन को बढ़ावा दें। अलग विधियों का प्रयोग महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई एक पद्धति आपके वह सभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराती, जिसकी आपको ज़रूरत है। छात्र–छात्राओं के सीखने और प्रगति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के विभिन्न तरीक़ों में शामिल हैं, देखना, सुनना, विषयों और प्रकरणों पर चर्चा, तथा लिखित वर्ग और गृह-कार्य की समीक्षा करना।

अभिलेखन

पूरे भारत के सभी स्कूलों में रिकॉर्डिंग का सबसे आम स्वरूप रिपोर्ट कार्ड के उपयोग के माध्यम से होता है, लेकिन इसमें आपको एक छात्र के सीखने या व्यवहार के सभी पहलुओं को रिकॉर्ड करने की अनुमति नहीं हो सकती है। इस काम को करने के कुछ सरल तरीक़े हैं, जिन पर भी आप विचार कर सकते हैं, जैसे कि:

- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में जो आप देखते हैं उसे डायरी/नोटबुक/रजिस्टर में नोट करना
- छात्र–छात्राओं के कार्य के नमूने (लिखित, कला, शिल्प, परियोजनाएँ, कविताएँ आदि) पोर्टफ़ोलियो में रखना
- प्रत्येक छात्र का प्रोफ़ाइल तैयार करना
- छात्र–छात्राओं की किन्हीं असामान्य घटनाओं, परिवर्तनों, समस्याओं, शक्तियों और शिक्षण प्रमाणों को नोट करना।

प्रमाण की व्याख्या

जैसे ही सूचना और प्रमाण एकत्रित और अभिलिखित हो जाए, उसकी व्याख्या करना ज़रूरी है, ताकि यह समझ सकें कि प्रत्येक छात्र किस प्रकार सीख रहा है और प्रगति कर रहा है। इस पर सावधानी से विचार करने और विश्लेषण करने की आवश्यकता है। फिर आपको शिक्षण में सुधार करने, संभवतः छात्र–छात्राओं को फ़ीडबैक देकर या नए संसाधनों की खोज करके, समूहों को पुनर्व्यवस्थित करके, या शिक्षण बिंदु को दोहरा कर अपने निष्कर्षों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

सुधार के लिए योजना बनाना

आकलन सीखने की विशिष्ट एवं भिन्न–भिन्न गतिविधियों के आयोजन द्वारा ज़रूरतमंद छात्र–छात्राओं पर ध्यान देने तथा अधिक तेज़ छात्र–छात्राओं को चुनौती देते हुए प्रत्येक छात्र को सार्थक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करने में आपकी मदद कर सकता है।

अतिरिक्त संसाधन

- Teachers of India classroom resources: http://www.teachersofindia.org/en
- 'Children talk their way into literacy' by Gordon Wells: http://people.ucsc.edu/~gwells/Files/Papers_Folder/Talk-Literacy.pdf

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Amritavalli, R. (2007) English in Deprived Circumstances: Maximising Learner Autonomy. Department of Linguistics, The English and Foreign Languages University, University Publishing Online: Foundation Books.

Cummins, J. (2000) Language, Power, and Pedagogy: Bilingual Children in the Crossfire. Bristol: Multilingual Matters.

Cummins, J. (undated) 'BICS and CALP' (online), Jim Cummins' Second Language Learning and Literacy Development Web. Available from: http://iteachilearn.org/cummins/bicscalp.html (accessed 2 July 2014).

Gibbons, P. (2002) Scaffolding Language, Scaffolding Learning: Teaching Second Language Learners in the Mainstream Classroom. Portsmouth: Heinemann.

Hastings, S. (2003) 'Questioning', *TES Newspaper*, 4 July. Available from: http://www.tes.co.uk/article.aspx?storycode=381755 (accessed 22 September 2014).

Hattie, J. (2012) *Visible Learning for Teachers: Maximising the Impact on Learning*. Abingdon: Routledge.

Krashen, S. (1981) Second Language Acquisition and Second Language Learning. Oxford: Pergamon Press.

Krashen, S. (1982) Principles and Practice in Second Language Acquisition. Oxford: Pergamon Press.

Mohan, B. (1986) Language and Content. Reading: Addison-Wesley.

Mohan, B., Leung, C. and Davison, C. (eds) (2001) English as a Second Language in the Mainstream: Teaching, Learning and Identity. New York, NY: Longman.

Wells, G. (2009) The Meaning Makers: Learning to Talk and Talking to Learn, 2nd edn. Bristol: Multilingual Matters.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस इकाई में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

RV VSEI संसाधन केंद्र (http://www.rvec.in/)। (RV VSEI Resource Centre (http://www.rvec.in/).

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।